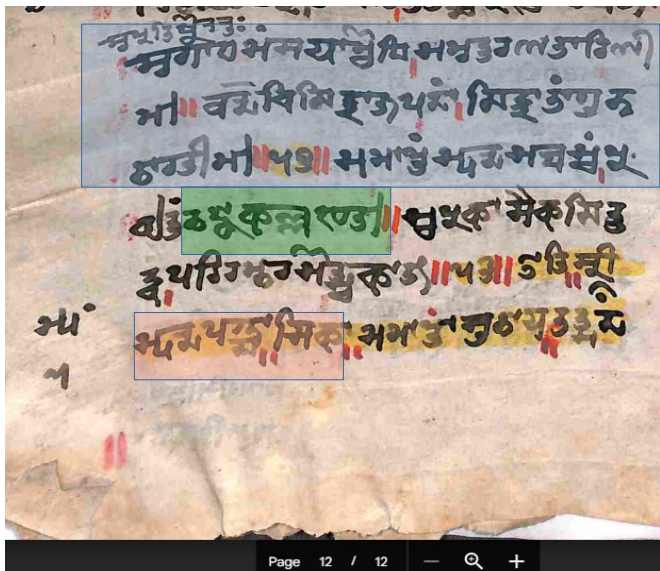


शक्ति-विशिष्ट शङ्कर की वन्दना  
 यस्योन्मेषनिमेषाभ्यां जगतः प्रलयोदयौ ।  
 तं शक्तिचक्रविभवप्रभवं शङ्करं स्तुमः ॥ १ ॥

Ref: <https://archive.org/details/SpandaKarikaShyamakantaDwivediAnanda/page/n117/mode/2up>



गुरुवाणी की वन्दना एवं भट्टकल्लट के द्वारा स्पन्दकारिका के प्रणयन की पुष्टि—  
 अगाधसंशयाम्भोधिसमुत्तरणतारिणीम् ।  
 वन्दे विचित्रार्थपदां चित्रां तां गुरुभारतीम् ॥ ५२ ॥  
 वसुगुप्तादवाप्येदं गुरोस्तत्त्वार्थदर्शिनः ।  
 रहस्यं श्लोकयामास सम्यक् श्रीभट्टकल्लटः ॥ ५३ ॥

Ref : <https://archive.org/details/SpandaKarikaShyamakantaDwivediAnanda/page/n509/mode/2up>















मङ्गलपत्रकामनार्थं  
नमो ह्यस्तु

विनमः परमेश्वर्य उच्यते सुप्रसन्नचित्तैः

विनास्तु मन्त्रे मङ्गलपत्रकामनार्थं

हं ह्यस्तु भूतलये मया उमंजि मन्त्रवि

उच्यते मङ्गलपत्रकामनार्थं मङ्गलपत्रकामनार्थं

ठव भूतलये मया उमंजि मन्त्रवि

उच्यते मङ्गलपत्रकामनार्थं मङ्गलपत्रकामनार्थं

न चोक्तं परमेश्वर्य उच्यते सुप्रसन्नचित्तैः

उच्यते मङ्गलपत्रकामनार्थं मङ्गलपत्रकामनार्थं

निवृत्तं निवृत्तं मया उमंजि मन्त्रवि

मङ्गलपत्रकामनार्थं मङ्गलपत्रकामनार्थं

मङ्गलपत्रकामनार्थं मङ्गलपत्रकामनार्थं

मङ्गलपत्रकामनार्थं मङ्गलपत्रकामनार्थं

मङ्गलपत्रकामनार्थं मङ्गलपत्रकामनार्थं

मङ्गलपत्रकामनार्थं मङ्गलपत्रकामनार्थं

मङ्गलपत्रकामनार्थं मङ्गलपत्रकामनार्थं

निवृत्तं निवृत्तं मया उमंजि मन्त्रवि



पिण्डसुति ॥ १० ॥ सुतिरुः भूतवेव  
<sup>मिनुविषुः</sup>

किंकरेभीतिवभधन ॥ पावत्रायद  
<sup>यम</sup>

मंगसुउरभनः भूतिधुतः ॥ ११ ॥  
<sup>भनजुय</sup>

यभवभुंभभान्भुयस्यंभभवसुति ॥  
<sup>भन उरु</sup>

उमवभुंरुतिभुदभितिभरुल्लुतिधुति ॥  
<sup>सवभुं</sup>

उमभितेसभानलभभभद्वरुवधि ॥  
<sup>भन उरु</sup>

भभभुवदभुभितेदिद्वरुभुगेभर  
<sup>समीरभनभ</sup>

भा ॥ १२ ॥ उमउमिमरुदेधिभुली  
<sup>यभभुवद्वरुभुभितेदिद्वरुभुगेभर</sup>

नमसिठभु ॥ भभभुपमवभुः  
<sup>यभभुवद्वरुभुभितेदिद्वरुभुगेभर</sup>

भुवभुःभभनव/उः ॥ १५ ॥ उम  
<sup>सुतिरुय विगव</sup>

रुधुवलेभरुः भवभुवलेभरुः  
<sup>भन उरु</sup>

भुवउतेपिकरुयकरुनीवरुदिनः ॥  
<sup>सुतिरुय</sup>



ॐ शुभं यद्येभि निवृत्तं कः ॥ भाय कलहृदिः ॥

उच्चमभ्युत्थीयत्तुमात्तुपनिगच्छः॥

मियकुं

भद्रं शपकुमिडुनउनेडेसिवपमिः॥ ३१॥

मन्त्राङ्कणव्याख्या

यमभुवभयेणीवः भचरुवभभुव

मंचावृत्तियुद्धादिगुणः

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

मय्युत्तयेः

येनमिवभूषणशुभ्र

३: ॥ १३ ॥ उन्नमककुम्भितुभुनभावयति

भूतयःमिवः॥ ठेजैवेठेगुवेनभ

नृद्धवृद्धमभि

भद्रयभवरागद्वयमिति

गमचइभक्तिः ॥ १७ ॥ ३ डिवाय

भुमंविदिः श्रीगुरुपिपल्लवगणतः ॥

मंथसुत्र उतं यजेत्पुनर्वर्जं नमः ॥

30

भक्तुः भक्त

मृगमवेमयभुष्टेयभुष्टयिगेडभि॥

उत्तुखव

३ मेव उय भ ६

भक्तभञ्जिमारयिभैः

५०

उमङ्गुतभमभडिगिङ्गुतःभापक

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३० ॥



पू० धिगयभव ईने गुरुः ॥ ७०० निचल

मीकममिवेभमवमयिनी ॥ ३१॥ यव

सुहृदिउपाउरुण्डिमुनूदिमिमुताना ॥

मेमभरेमयेरुमभमयतिमेदिनः ॥

उषभुपेपुकीपुजुनूयभुनडिभ

न ॥ निडंभुएउरंभयभुतेवसुभक

मयेड ॥ ३२॥ सुहृषउभउरुभुभुधि

भुभुभकडुतः ॥ भउतेलेकिभुवराण

इधभमइये ॥ ३५॥ यषहृजेभुऐम

धुःभावणनेपिमउभि ॥ भुयःभुएउरे

ठडिभुतेलेइणठविडः ॥ ३७॥ उषाय

इरभजेनयेनयइयमभुताम ॥



उनेवभयनेन

प्रतिठडि

उउमचलभात्रु भुनमिगडंभवउते ॥ ३१

ममउप

उले

मनुनेपितमरभयतःकदेभवउते ॥ ३२

सुभठकमेनीनन

सुभयिदुका मउमयेतिवकुमिउः ॥ ३३

सुभभुवन

हउ

सुभयकठकमभिरनडि

मनेनपिभितमरभयमभवउमयः ॥

सुभउवभित

मवेउड

उमभुभुपिभुनभुचवठविभुति ॥ ३७

विनामिनी

मनेः

उडडिः

मनिचिल्लिठकमेउउमभुनतः ॥

सुभठवेन

मलन

मनिः कठकगडिड

डिः ॥ उमभधविल्लभुमडुडः ॥ ३८

ककडिधय

सुभठक

डुक ॥ ३९ ॥ एकमिउभुभजभयतः ॥

सुभमिउमडुड

मिउयः कठक

मिनि

मिउययउ

मपमयः ॥ उमेधः भडविमयः भयतः

हापकउय

सुभमिउमडुड

उलेउयः

उमयभनः भुपलकयेड ॥ ४० ॥ सुउविभुतेन

सुभमिउमडुड

भाये

भुभउभुमेरुपभभममतेरभः ॥ भुवउउमिगलेव ॥

मेठकडनमलिः ॥ ४१ ॥ मिभकयेवभ

मचठकन



च<sup>३६</sup>उ<sup>३६</sup>रु<sup>३६</sup>ष्ट<sup>३६</sup>प्र<sup>३६</sup>व<sup>३६</sup>ति<sup>३६</sup>भु<sup>३६</sup>ते॥ उ<sup>३६</sup>रु<sup>३६</sup>किं<sup>३६</sup>च<sup>३६</sup>रु<sup>३६</sup>ने<sup>३६</sup>ते॥  
 न<sup>३६</sup>भु<sup>३६</sup>य<sup>३६</sup>म<sup>३६</sup>व<sup>३६</sup>व<sup>३६</sup>ते<sup>३६</sup>भु<sup>३६</sup>ते॥ २३॥ भु<sup>३६</sup>रु<sup>३६</sup>कः<sup>३६</sup>भ<sup>३६</sup>च<sup>३६</sup>  
 म<sup>३६</sup>ति<sup>३६</sup>भु<sup>३६</sup>रु<sup>३६</sup>ने<sup>३६</sup>न<sup>३६</sup>ले<sup>३६</sup>रु<sup>३६</sup>गे<sup>३६</sup>म<sup>३६</sup>भ<sup>३६</sup>॥ १०॥ क<sup>३६</sup>रु<sup>३६</sup>ने<sup>३६</sup>  
 भ<sup>३६</sup>वे<sup>३६</sup>रु<sup>३६</sup>चं<sup>३६</sup>उ<sup>३६</sup>ते<sup>३६</sup>न<sup>३६</sup>भ<sup>३६</sup>ते<sup>३६</sup>॥ २२॥ म<sup>३६</sup>च<sup>३६</sup>  
 र<sup>३६</sup>मि<sup>३६</sup>भ<sup>३६</sup>भ<sup>३६</sup>उ<sup>३६</sup>भ<sup>३६</sup>म<sup>३६</sup>जि<sup>३६</sup>व<sup>३६</sup>न<sup>३६</sup>भु<sup>३६</sup>रु<sup>३६</sup>भ<sup>३६</sup>॥ क<sup>३६</sup>  
 न<sup>३६</sup>वि<sup>३६</sup>ल<sup>३६</sup>भु<sup>३६</sup>वि<sup>३६</sup>रु<sup>३६</sup>वे<sup>३६</sup>ग<sup>३६</sup>तः<sup>३६</sup>भ<sup>३६</sup>भ<sup>३६</sup>प<sup>३६</sup>सुः<sup>३६</sup>भ<sup>३६</sup>उः॥  
 प<sup>३६</sup>र<sup>३६</sup>भ<sup>३६</sup>उ<sup>३६</sup>भ<sup>३६</sup>प<sup>३६</sup>य<sup>३६</sup>भु<sup>३६</sup>भु<sup>३६</sup>यः<sup>३६</sup>भु<sup>३६</sup>रु<sup>३६</sup>ये<sup>३६</sup>रु<sup>३६</sup>वः॥  
 उ<sup>३६</sup>न<sup>३६</sup>भु<sup>३६</sup>उ<sup>३६</sup>भ<sup>३६</sup>ति<sup>३६</sup>भ<sup>३६</sup>म<sup>३६</sup>उ<sup>३६</sup>भ<sup>३६</sup>रु<sup>३६</sup>गे<sup>३६</sup>म<sup>३६</sup>भः॥ २॥  
 भु<sup>३६</sup>उ<sup>३६</sup>प<sup>३६</sup>व<sup>३६</sup>रु<sup>३६</sup>न<sup>३६</sup>भ<sup>३६</sup>भ<sup>३६</sup>म<sup>३६</sup>ज<sup>३६</sup>यः<sup>३६</sup>भ<sup>३६</sup>उ<sup>३६</sup>भ<sup>३६</sup>उ<sup>३६</sup>भ<sup>३६</sup>उः॥  
 य<sup>३६</sup>उः<sup>३६</sup>भ<sup>३६</sup>भ<sup>३६</sup>उ<sup>३६</sup>व<sup>३६</sup>य<sup>३६</sup>न<sup>३६</sup>वि<sup>३६</sup>न<sup>३६</sup>भु<sup>३६</sup>रु<sup>३६</sup>ये<sup>३६</sup>रु<sup>३६</sup>वः॥  
 भ<sup>३६</sup>यं<sup>३६</sup>रि<sup>३६</sup>य<sup>३६</sup>भु<sup>३६</sup>रु<sup>३६</sup>म<sup>३६</sup>जिः<sup>३६</sup>मि<sup>३६</sup>व<sup>३६</sup>भु<sup>३६</sup>व<sup>३६</sup>म<sup>३६</sup>व<sup>३६</sup>  
 डि<sup>३६</sup>नी॥ भु<sup>३६</sup>रु<sup>३६</sup>यि<sup>३६</sup>री<sup>३६</sup>भु<sup>३६</sup>भ<sup>३६</sup>न<sup>३६</sup>भु<sup>३६</sup>रु<sup>३६</sup>भ<sup>३६</sup>भु<sup>३६</sup>

प<sup>३६</sup>र<sup>३६</sup>भ<sup>३६</sup>मि<sup>३६</sup>भु<sup>३६</sup>रु<sup>३६</sup>॥  
 प<sup>३६</sup>प<sup>३६</sup>भ<sup>३६</sup>मि<sup>३६</sup>रु<sup>३६</sup>॥

२५

२७

२३



ਪ੍ਰਤਿਠਾਤਿ

समंती

रत्न

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

सुखदुःख

श्रीकृष्णविरचिते

विनामिनी

सुश्रुतवेत्त

१० कडविधये

महामाया

पुष्पक उवा  
उत्तमः

मृगयामात्रं प्रोक्तं  
मृगयामात्रं प्रोक्तं

भावे

मच'ठ'वा'न







मयः कृतवर्त्तमान

चापद्वयमवैरुक्तं

उमः इत्युमः भवेदं वृत्तिवर्त्तनः ॥ ५

दधुकेन मंरुं भुवुं भुवुं ये वृवभा ॥ ६ ॥

हुतं परवसेठेगं उरुवः इमरुतः ॥ ७ ॥

लामभरु  
पुवः कृत  
भुविनमः  
भुमभरु  
ठवे

भुतिभुलयेभुः भुकरुं मभुमकुले ॥ ८ ॥

यमः इमः उरुः भुमः उरुलये वृवे ॥

विषमः उरुः उमः उरुः उरुः उरुः ॥ ९ ॥

मगः मंमयः भुवि मभुतुगलः उरुलि

भा ॥ वरुविमिः इतः पंरुः मिः उंरुः

ठगुतीभा ॥ ५ ॥ मभुं मभुं मभुं मभुं

वतुं ठगुः कलः एतः ॥ भुः कः मेकः मिः

दुः पतिगः भुः कः ॥ ५ ॥ उरुः मी

भुः पः मिः मभुं उरुः उरुः

भं  
५